

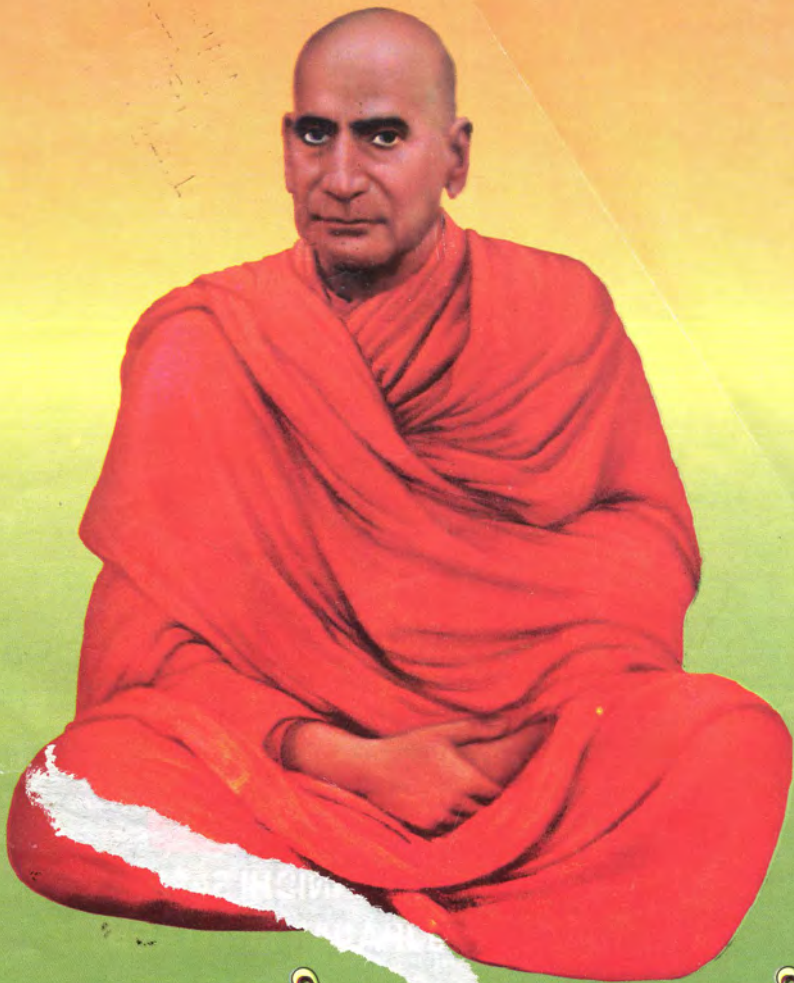


ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा का पाक्षिक मुखपत्र

दिसम्बर 2018 (द्वितीय)



अमर हुतात्मा स्वामी श्रीकृष्ण सरस्वती जी

Email : aryapsharyana@yahoo.in

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

Visit us : www.apsharyana.org



स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर वेद प्रचार मण्डल सोनीपत द्वारा आयोजित कार्यक्रम की झलकियां।

दान हेतु बैंक खाता

ACCOUNT NAME - ARYA PRATINIDHI SABHA HARYANA

BANK NAME - PNB JHAJJAR ROAD ROHTAK

Account No. - 0406000100426205

IFSC - PUNB0040600

MICR - 124024002



सृष्टि संवत् 1,96,08,53,119
विक्रम संवत् 2075
दयानन्दाब्द 195

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
की
मुख-पत्रिका

वर्ष 14 अंक 21

सम्पादक :
उमैद शर्मा

पत्रिका-शुल्क

देश में
वार्षिक-200 रुपये आजीवन-2000 रुपये
विदेश में
वार्षिक शुल्क 100 डॉलर
आजीवन 400 डॉलर

पत्रिका का स्वामित्व

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि०)
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ,
गोहाना रोड, रोहतक-124001

सम्पादक-मण्डल

1. आचार्य सोमदेव
2. डॉ० जगदेव विद्यालंकार
3. श्री चन्द्रभान सैनी

सम्पादकीय विभाग

सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
सम्पर्क सूत्र-
चलभाष :-
मो० 89013 87993, 7082783793

॥ ओ३म् ॥

आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय चिन्तन एवं
वैदिक जीवन मूल्यों की पाक्षिक पत्रिका

आर्य प्रतिनिधि

दिसम्बर, 2018 (प्रथम)

1 से 15 दिसम्बर, 2018 तक

इस अंक में....

- | | |
|--|----|
| 1. आदर्श पुरुष स्वामी श्रद्धानन्द | 2 |
| 2. सत्यार्थप्रकाश प्रश्नोत्तरी | 3 |
| 3. फलित ज्योतिष की अमान्य मान्यताओं से मानव जगत् से सबसे बड़ा भ्रामिक वैचारिक शोषण | 5 |
| 4. स्वामी श्रद्धानन्द हमारे प्रेरणास्रोत | 7 |
| 5. प्रेरक वचन | 8 |
| 6. गायत्री की साधना ही ईश्वर प्राप्ति का मार्ग है | 8 |
| 7. गहरे में पैठ, मोती मिलेंगे | 9 |
| 8. जब काकोरी षड्यन्त्र केस हुआ | 10 |
| 9. ब्रह्मचर्य एवं आर्यसमाज के अनूठे नुस्खे | 12 |
| 10. वेदज्ञान ही सही निदान | 13 |
| 11. अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द संन्यासी | 13 |
| 12. समाचार-प्रभाग | 14 |

आर्य प्रतिनिधि पाक्षिक पत्रिका के प्रसार में सहयोग दें

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने योग्य पत्रिका है। यदि आप इसके पाठक बनेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे अन्य लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करके ऋषि ऋण से अनृण होंगे।

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक का वार्षिक शुल्क 200/- रुपये एवं आजीवन शुल्क 2000/- रुपये है।

आप उपरोक्त राशि 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' दयानन्दमठ रोहतक के नाम से बैंक ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा भिजवाकर सदस्य बन सकते हैं।

—सम्पादक

आदर्श पुरुष स्वामी श्रद्धानन्द

□ आचार्य सोमदेव, ऋषि उद्यान, अजमेर

जो जाति अपने महापुरुषों का सम्मान नहीं करती वह जाति धीरे-धीरे अपने आदर्श को भी खो देती है। इतिहास के महापुरुष समाज में सदा नई-नई प्रेरणा देते हैं। नई पीढ़ी के पथ-प्रदर्शक होते हैं।

महर्षि दयानन्द के बाद आर्यसमाज में अनेक महापुरुष हुए, उन सभी महापुरुषों में अपनी-अपनी विशेष प्रतिभा रही है। इन सभी महापुरुषों में स्वामी श्रद्धानन्द जी अनेक प्रतिभाओं, योग्यताओं, विशेषताओं को संजोए हैं। यदि अनेक आदर्श एक में देखने हों तो वे स्वामी श्रद्धानन्द जी हैं। आदर्श शिष्य, आदर्श वकील, आदर्श आचार्य, आदर्श समाज सुधारक, आदर्श कर्मयोगी, आदर्श शुद्धि-आन्दोलन के गठनकर्त्ता आदि-आदि। स्वामी श्रद्धानन्द जी का जीवन बिगड़ने पर इतना बिगड़ा था कि अनेक व्यसनों से ग्रसित हो नास्तिक बन गये थे और जब सुधरने की ओर जीवन चला तो महात्मा बन गये। स्वामी जी के इस सुधार को हम प्रणाम करते हैं।

जब मुंशीराम ने ऋषि के दर्शन व उपदेश श्रवण किये तभी से वे उनके शिष्य बन गये। और शिष्य भी ऐसे कि आदर्श शिष्य बने। ऋषि दयानन्द के आदर्शों को पूरी तरह से अपनाने वाले आदर्श शिष्य, उस समय जाति बाह्य विवाह कौन स्वीकार करता था किन्तु इन आदर्श शिष्य ने अपनी पुत्रियों का विवाह जाति बाह्य किया। कन्या पाठशाला और गुरुकुल की स्थापना उनके आदर्श शिष्यत्व को दर्शाती है। महर्षि के प्रति अपने उद्गार प्रकट करते हुए स्वामी श्रद्धानन्द जी लिखते हैं—“ऋषिवर! तुम्हें भौतिक शरीर त्यागे 41 वर्ष हो चुके परन्तु तुम्हारी दिव्य मूर्ति मेरे हृदय पर अब तक ज्यों की त्यों अंकित है। मेरे निर्बल हृदय के अतिरिक्त कौन मरणधर्मा मनुष्य जान सकता है कि कितनी बार गिरते-गिरते तुम्हारे स्मरण मात्र ने मेरी आत्मिक रक्षा की है। तुमने कितनी क्षीण हुई आत्माओं की काया पलट दी, इसकी गणना कौन मनुष्य कर सकता है?..... मैं था इस कहानी में मैंने छिपाया नहीं, मैं क्या बन गया और अब क्या हूँ, यह सब तुम्हारी ही कृपा का परिणाम है।

भगवन्! मैं तुम्हारा ऋणी हूँ, उस ऋण से मुक्त होना चाहता हूँ, इसलिए जिस परमपिता की गोद में तुम परमानन्द का अनुभव कर रहे हो उसी से प्रार्थना करता हूँ कि मुझे तुम्हारा सच्चा शिष्य बनने की शक्ति प्रदान करे।”

मुंशीराम वकील भी बने तो आदर्श वकील बने। स्वामी श्रद्धानन्द स्वयं लिखते हैं—“मेरे पास एक मुंशी मुकद्दमा लाया। बही हिसाब के रूप में 1000 (एक हजार) का साधारण दावा करना था, मैंने बही देखी तो 1000 की बाकी पर टिकट

न था, इसलिए कह दिया कि उस साक्षी पर दावा नहीं कर सकता। दावा चलने का एक और सीधा ढंग था, वह भी साहूकार महाशय को बतला दिया। उस समय तो साहूकार महाशय चले गये किन्तु कुछ दिनों के पश्चात् उसी बाकी पर अपनी ओर से टिकट लगाकर अर्जी दावा लिखवा दावा करवा दिया। पहली पेशी के दिन मेरे मुंशी से मिलकर मुख्तारनामे पर मेरे हस्ताक्षर करा लिए।

इन हस्ताक्षरों की कहानी भी बड़ी मनोरञ्जक है। यदि प्रातःकाल ही मुझसे हस्ताक्षर मांगे जाते तो मैं बही को देखना चाहता इसलिए जब मैं कचहरी के लिए बग्गी में चढ़ने लगा तो मुंशी जी ने मुख्तारनामा पेश किया। मैंने पूछा कि बही आदि देखनी चाहिए। मुंशी साहब बोले-हुजूर! मामूली बही हिसाब पर 1000 रुपये का दावा है। 50/- रुपये फीस देता है, 25/- रुपये वसूल हो चुके हैं सिर्फ एक पेशी का काम है।

बड़ी कचहरी से काम करके मुन्सिफी में लौटा तो उसी मुकद्दमे के लिए मेरी प्रतीक्षा हो रही थी। मुन्सिफ अछरुराम साहब मेरे बड़े कृपालु थे। जवाब-दावा मेरे हाथों में देकर कहा कि मैं विवादास्पद विषय नियत कर दूँ। मुद्दालेह का जवाब-दावा पढ़कर मुझे संदेह हुआ। मैंने अपने मुवक्किल मुद्दई के मुंह की ओर देखा और बही का हिसाब मांगा। बस निश्चय हो गया कि मुद्दई साहब की सब कारस्तानी है। मैंने मुन्सिफ साहब से कह दिया कि मुकद्दमे में जालसाजी होने के कारण मैं उसमें पैरवी नहीं करूँगा और मुंशी को आज्ञा दी कि 25/- रुपये प्राप्त किये हुए वापिस कर दे। मुन्सिफ साहब ने अंग्रेजी में बहुतेरा समझाया कि इससे मेरी प्रसिद्धि उलटे प्रकार की हो जायेगी और मेरी आर्थिक दशा को हानि पहुँचेगी किन्तु मैंने एक न मानी और अपना बयान देकर वापिस लौट आया।”

आदर्श वकील मुंशीराम ने जालसाजी का मुकद्दमा नहीं लड़ा। इससे उनकी आमदनी 500/- रुपये से कम होकर 150/- के लगभग रह गई थी। असत्य परवाह न कर सत्य की परवाह करने वाले आदर्श वकील।

आदर्श आचार्य श्रद्धानन्द। स्वामी जी गुरुकुल के आचार्य पद पर रहते हुए विद्यार्थियों से स्नेहपूर्ण व्यवहार उनका अद्वितीय रहा पिता के तुल्य स्नेह देने वाले आचार्य श्रद्धानन्द थे। अपने छात्र की उलटी अपने हाथों में लेकर सफाई करने वाले श्रद्धानन्द जैसे आचार्य कर सकते हैं। छात्रों की विद्या पढ़ने का प्रबन्ध उत्तम से उत्तम अध्यापक लाकर किया। आदर्श आचार्य को नमन।

स्वामी श्रद्धानन्द जी तो आदर्श के भण्डार हैं। आर्यजन स्वामी जी से प्रेरणा लेते रहते तो आर्यसमाज नीचे की ओर न जाकर ऊपर की ओर जा रहा होता। स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन आर्यों के लिए सदा प्रेरणा देता रहेगा, आर्य लोग प्रेरणा पाकर अपनी व समाज की उन्नति करेंगे। इसी आशा के साथ—

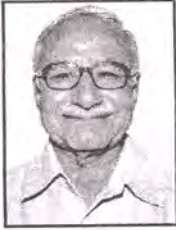
सत्यार्थप्रकाश प्रश्नोत्तरी

एकादश समुल्लास के प्रश्नोत्तर

□ कन्हैयालाल आर्य, उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

गतांक से आगे....

प्रश्न 828. ज्वालामुखी तो प्रत्यक्ष देवी है सबको खा जाती है और प्रसाद देवे तो आधा खा जाती और आधा छोड़ देती है। मुसलमान बादशाहों ने उस पर जल की नहर छुड़वाई और लोहे के तवे जड़वाये तो भी ज्वाला न बुझी और न रुकी। क्या यह बात मानने योग्य नहीं? **उत्तर-नहीं!** क्योंकि वह ज्वालामुखी पहाड़ से आग निकलती है। उसमें पुजारी लोगों की लीला है जैसे बघार के घी के चमचे में ज्वाला आ जाती, अलग करने से वा फूँक मारने से बुझ जाती और थोड़े से घी को खा जाती, शेष छोड़ जाती है, उसी के समान यहाँ भी है। यह एक प्राकृतिक ज्वाला है, यह अप्राकृतिक बाधाओं से नहीं रोकी जा सकती।



प्रश्न 829. हिंगलाज भी आधी रात को सवारी कर पहाड़ पर दिखाई देती, पहाड़ को गर्जना कराती है। यह बात मानने योग्य है या नहीं?

उत्तर-नहीं, बिना एक मन्दिर, कुण्ड और इधर-उधर नल-रचना के हिंगलाज में न कोई सवारी होती है और जो कुछ होता है वह सब पोप-पुजारियों की लीला से, दूसरा कुछ भी नहीं।

प्रश्न 831. योनियन्त्र से निकलने से पुनर्जन्म नहीं होता और तुमरा बांधने से पूरा महापुरुष कहाता-इत्यादि सब बातें मानने योग्य नहीं?

उत्तर-नहीं, योनि का यन्त्र उन लोगों ने धन हरने के लिए बना रखा है और तुमरे भी उसी प्रकार पोपलीला के हैं। उससे महापुरुष हो तो एक पशु पर तुमरे का बोझ लाद दिया जाये तो क्या वह महापुरुष हो जायेगा? ये सब पाखण्ड की बातें हैं।

प्रश्न 832. अमृतसर का तालाब अमृतरूप है, क्या यह भी मानने योग्य नहीं?

उत्तर-नहीं! उस तालाब का नाममात्र अमृतसर है। जब कभी जंगल होगा तब उसका जल अच्छा होगा। उससे

उसका नाम अमृतसर धरा होगा। जो अमृत होता तो पुराणियों के मानने के तुल्य कोई क्यों मरता?

प्रश्न 833. रेवालसर में बेड़े तैरते, क्या मानने योग्य नहीं?

उत्तर-नहीं! रेवालसर में बेड़े तैरने में कुछ कारीगरी होगी।

प्रश्न 834. एक रीठे का फल आधा मीठा और एक भित्ती नमती और गिरती नहीं, क्या यह मान्य नहीं?

उत्तर-नहीं! भित्ती की कुछ बनावट ऐसी होगी जिससे नमती होगी और गिरती न होगी। रीठे कलम के पैबन्दी होंगे अथवा गपोड़ा होगा।

प्रश्न 835. अमरनाथ में आप से आप लिंग बन जाते, हिमालय में कबूतर के जोड़े आकर सबको दर्शन देकर चले जाते हैं, क्या यह भी मान्य नहीं?

उत्तर-नहीं! अमरनाथ में बर्फ के पहाड़ बनते हैं, तो जल जम के छोटे लिंग का बनना कौन-सा आश्चर्य है? और कबूतर के जोड़े पालित होंगे, पहाड़ की आड़ में से मनुष्य छोड़ते होंगे, दिखलाकर टका हरते होंगे।

प्रश्न 836. हरद्वार स्वर्ग का द्वार। हर की पैड़ी में स्नान करें तो पाप छूट जाते हैं, यह बात कैसी है?

उत्तर-हरद्वार उत्तर पहाड़ों में जाने का एक मार्ग का प्रारम्भ है। हर की पैड़ी स्नान के लिए कुण्ड की सीढ़ियों को बनाया है। सच पूछो तो 'हाड़ की पैड़ी' है, क्योंकि देश-देशान्तर के मृतकों के हाड़ उसमें पड़ा करते हैं। इससे स्नान करने से पाप कभी नहीं छूट सकते, पाप बिना भोगे नहीं कटते।

प्रश्न 837. तपोवन में रहने से तपस्वी होता है, इसको मानते हो या नहीं?

उत्तर-नहीं! तपोवन जब होगा, तब होगा अब तो भिक्षुकवन है। तपोवन में जाने, रहने से तप नहीं होता किन्तु तप तो करने से होता है। वहाँ बहुत से दुकानदार झूठ भी बोलते रहते हैं।

प्रश्न 838. गंगोत्री में गोमुख, देवप्रयाग, उत्तर काशी

में गुप्तकाशी, त्रियुगी नारायण के दर्शन होते हैं। इनको मानते हो या नहीं ?

उत्तर-नहीं! पहाड़ के ऊपर से जल गिरता है। गोमुख का आकार टका लेने वालों ने बनाया होगा और वही पहाड़ पोप का स्वर्ग है। वहाँ उत्तरकाशी आदि स्नान-ध्यानियों के लिए अच्छा है परन्तु दुकानदारों के लिए वहाँ भी दुकानदारी है। देवप्रयाग पुराणों के गपोड़ों की लीला है अर्थात् जहाँ अलकनन्दा और गंगा मिलती हैं, वहाँ देवता बसते हैं, ऐसे गपोड़े न मारें तो वहाँ कौन जाये ? और टका कौन देवे ? गुप्तकाशी तो नहीं है, वह प्रसिद्धकाशी है। तीन युग की धूनी तो नहीं दिखती परन्तु पोपों की दस-बीस पीढ़ी की धूनी होगी।

प्रश्न 839. क्या केदार और बदरीनारायण के दर्शन से मुक्ति नहीं मिलती ?

उत्तर-केदार का वह स्थान और भूमि अच्छी है परन्तु वहाँ भी एक जमे हुए पत्थर पर पुजारी वा उनके चेलों ने मन्दिर बना रखा है। वहाँ महन्त, पुजारी, पण्डे विषयानन्द करते हैं। वैसे ही बदरीनारायण में ठग विद्या वाले बहुत से बैठे हैं। रावल जी वहाँ के मुख्य हैं। एक स्त्री छोड़ अनेक स्त्रियां रखे बैठे हैं।

प्रश्न 840. विन्ध्याचल में विन्ध्येश्वरी काली अष्टभुजा प्रत्यक्ष सिद्ध है। विन्ध्येश्वरी तीन समय में तीन रूप बदलती हैं और उसके बारे में प्रसिद्ध है कि वहाँ मक्खी एक भी नहीं होती। क्या यह सब बातें मिथ्या हैं ?

उत्तर-प्रत्यक्ष तो आंखों से तीन मूर्तियां दिखती हैं कि पाषाण की मूर्तियां हैं। और तीन काल में तीन प्रकार के रूप होने का कारण पुजारी लोगों के वस्त्र आदि आभूषण आदि पहिराने की चतुराई है। और मक्खियाँ हजारों, लाखों होती हैं, ऐसा महर्षि दयानन्द जी ने स्वयं देखा है। अतः सब बातें मिथ्या हैं।

प्रश्न 841. प्रयाग तीर्थराज है। वहीं शिर मुण्डाये तो सिद्ध, गंगा-यमुना के संगम में स्नान से इच्छा-सिद्धि को आप मानते हो या नहीं ?

उत्तर-प्रयाग में कोई नाई श्लोक बनाने हारा रहा होगा अथवा पोप जी को कुछ धन देके मुण्डन कराने का माहात्म्य बनाया या बनवाया होगा। प्रयाग (संगम) में स्नान करके स्वर्ग को जाता, तो कोई घर में लौटकर आता नहीं दिखता,

किन्तु घर को सब आते हुए दिखते हैं। तीर्थराज नाम भी टका लेने वालों ने धरा है।

प्रश्न 842. अयोध्या कई बार उड़कर सब बस्तीसहित स्वर्ग में चली गई। क्या यह बात भी मिथ्या है ? **उत्तर-** बिल्कुल मिथ्या। अयोध्या बस्तीसहित स्वर्ग में नहीं गई, वहीं की वहीं है। परन्तु पोपजी के मुख-गपोड़ों में अयोध्या स्वर्ग को उड़ गई। यह गपोड़ा शब्दरूप उड़ता फिरता है।

प्रश्न 843. मथुरा तीन लोक से न्यारी। वृन्दावन लीलास्थान है और गोवर्द्धन ब्रजयात्रा बड़े भाग्य से मिलती है। क्या यह बात मिथ्या है ?

उत्तर-मथुरा तीन लोक से न्यारी तो नहीं, परन्तु उसमें तीन जन्तु बड़े लीलाधारी हैं—(1) चौबे, जो कोई स्नान करने जाये तो अपना कर लेने को खड़े रहकर बकते रहते हैं, (2) जल में कछुवे काट ही खाते हैं, जिनके मारे घाट पर स्नान करना भी कठिन हो जाता है, (3) आकाश के ऊपर लालमुख के बन्दर पगड़ी, टोपी, गहने और जूते तक भी न छोड़ें, काट खावें। ये तीनों पोप और पोपजी के चेलों के पूजनीय हैं, इसलिए इनको तीन लोक से न्यारी मान लें, तो हमें कुछ नहीं कहना है। वृन्दावन जब था तब था, अब तो वेश्यावनवत् लल्ला-लल्ली और गुरु-चेली की लीला फैल रही है। वैसे ही गोवर्द्धन ब्रजयात्रा में भी पोपों की बन पड़ती है।

प्रश्न 844. सूर्यग्रहण में कुरुक्षेत्र में लाखों मनुष्यों का मेला होता है। वहाँ स्नान करने से पुण्य होता है। क्या ये सब बातें मिथ्या हैं ?

उत्तर-कुरुक्षेत्र में भी जीविका की लीला ही समझ लो। इनमें जो कोई धार्मिक पुरुष हैं, वह इस पोपलीला से पृथक् हो जाता है।

प्रश्न 845. यह मूर्तिपूजा और तीर्थ सनातन से चले आते हैं। ये झूठे क्योंकर हो सकते हैं ?

उत्तर-सनातन का अर्थ है 'जो सदा से चला आया है।' जो यह सदा से होता तो ब्राह्मणादि ऋषिमुनिकृत ग्रंथों में इनका नाम क्यों नहीं ? यह मूर्तिपूजा अढ़ाई-तीन हजार वर्षों के इधर-उधर वाममार्गियों और जैनियों से चली है। और ये तीर्थ भी नहीं थे। जो कोई इनके आरम्भ की परीक्षा करना चाहे वह पंडों की पुरानी बही और तांबे के पत्र आदि लेख देखे, तो निश्चय हो जायेगा कि ये सब तीर्थ पांच सौ अथवा सहस्र वर्ष से इधर ही बने हैं। **क्रमशः अगले अंक में...**

फलित ज्योतिष की अमान्य मान्यताओं से मानव जगत् से सबसे बड़ा भ्रामिक वैचारिक शोषण

□ पण्डित उम्मेद सिंह विशारद, वैदिक प्रचारक

उन्नीसवीं शताब्दी के सबसे महान् समाजिक सुधारक आर्य और अनार्य मान्यताओं का रहस्य बताने वाले युगपुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती जी अपने अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के द्वितीय सम्मुलास के प्रश्नोत्तर में लिखते हैं।

प्रश्न—तो क्या ज्योतिष शास्त्र झूठा है?

उत्तर—नहीं, जो उसमें अंक, बीज, रेखागणित विद्या है, वह सब सच्ची, जो फल की लीला है, वह सब झूठी है।

फलित ज्योतिष के द्वारा अवैदिक व सृष्टिक्रम विज्ञान के अमान्य अनार्य मान्यताओं को चतुर लोगों द्वारा भारत की जनता का वैचारिक शोषण करके अपना मनोरथ तो पूर्ण किया ही है, अपितु भारत वर्ष को गुलामी के दलदल में धकेलने का भी कार्य किया है। बड़े अफसोस के साथ लिखना पड़ रहा है कि यह पाखण्ड इस वैज्ञानिक युग में भी दिनोदिन बढ़ता जा रहा है। स्वार्थी और चतुर किन्तु ज्ञान विज्ञान से सून्य लोग भोली-भाली जनता को फलित ज्योतिष की आड़ में कई प्रकार से लूट रहे हैं।

इस माह का लेख फलित ज्योतिष पर लिखने का मन बना इसलिए प्रस्तुत लेख में क्लेवर क्षमता के अनुसार कई उदाहरण सहित लिखा जा रहा है। विस्तार आप स्वयं करके आगे भी प्रेषित करने की कृपा करें।

फलित ज्योतिष का पाखण्ड

कृतं मेदक्षिणे हस्ते जयोमेसव्य आहितः (अथर्व.) ईश्वरीय व्यवस्था में मानव कर्म करने के लिये स्वतन्त्र है और कर्मानुसार फल प्राप्ति ईश्वरीय व्यवस्था में होती है। मानव जैसा कर्म करता है वैसा ही फल उसको ईश्वर द्वारा दिया जाता है। अतः मनुष्यों को अपने दिल में भरोसा रखना चाहिए कि यदि पुरुषार्थ मेरे दायें हाथ में है तो सफलता मेरे बायें हाथ में है। अतः संसार में जितने भी कार्य सिद्ध होते हैं वह पुरुषार्थ से होते हैं। मनुष्य के जीवन में अगले क्षण क्या होने वाला है वह नहीं जानता है। ज्योतिषों द्वारा फलित आश्वासन भ्रामिक हैं, यह केवल मनुष्य को गुमराह करने वाला है।

उदाहरण 1—भारत में मुगल साम्राज्य की नींव डालने वाले लुटेरे बाबर की जीवन की एक घटना है। जब वह भारत पर आक्रमण करने आया तो भारत के प्रसिद्ध भविष्य बताने वाले ज्योतिष ने बाबर से कहा कि अभी आप भारत पर आक्रमण न

करें, इससे आपको सफलता नहीं मिलेगी। बाबर ने पूछा आपको यह जानकारी कैसे मिली। ज्योतिष ने कहा हमारे फलित ज्योतिष शास्त्र में लिखा है। बाबर ने कुछ सोचकर कहा ज्योतिष जी आप यह भी जानते होंगे कि आप और कितने वर्ष जिन्दा रहोगे, ज्योतिष ने कहा अभी मैं 37 वर्ष और जिन्दा रहूंगा, बाबर ने म्यान से तलवार निकाली और एक ही झटके में ज्योतिषी का सिर धड़ से अलग कर दिया और कहा कि जिसको अपने अगले क्षण का पता नहीं ऐसे पाखण्डों पर क्या विश्वास किया जा सकता है और उस ऐतिहासिक युद्ध में बाबर की विजय हुई और ज्योतिष की बात मिथ्या हुई।

उदाहरण 2—आप कल्पना करो कि मेरे सामने एक भोजन का थाल पड़ा है और उसमें दस कटोरियां हैं अलग-अलग व्यंजनों की हैं। पहले मैं कौनसी कटोरी का पदार्थ खाऊंगा ज्योतिष तो क्या स्वयं ईश्वर भी नहीं बता सकते हैं पहले मैं कौनसी चीज खाऊंगा क्योंकि कर्म करना मेरे स्वतन्त्रता के अधिकार में है।

उदाहरण 3—एक ब्राह्मण काशी में दस वर्ष ज्योतिष विद्या पढ़ के अपने गांव में आया गांव का एक उजट जाट लाठी लिये अपने खेत में जा रहा था, नमस्ते पश्चात् जाट ने पूछा आप कहां से आ रहे हैं, ब्राह्मण बोला मैं दस वर्ष काशी से ज्योतिष विद्या पढ़ के आ रहा हूँ। जाट ने पूछा महाराज ज्योतिष क्या होता है। ब्राह्मण ने बताया हम अगले क्षण आने वाली बातों को पहले बता देते हैं। जाट ने पूछा महाराज मैं पूछू तो आप बतायेंगे, क्यों नहीं अवश्य पूछिये। ब्राह्मण बोला मैं उच्च कोटि का भविष्यवक्ता बन गया हूँ। अब जाट ने कन्धे से लाठी उठाकर घुमाकर पूछा बता मैं तेरे इस लाठी को कहां मारूंगा। यह सुनकर ब्राह्मण नीचे ऊपर देखने लगा, यदि मैंने कहा कि सिर पे मारेगा तो वह पैरों पर ठोकेगा यदि पैरों पर कहा तो यह सिर पर ठोकेगा। ब्राह्मण सिर झुकाकर नीचे देखने लगा। इसलिए फलित ज्योतिष पाखण्ड है।

नवग्रहों को मानव पर लगाने का भ्रम

प्रश्न—(सत्यार्थप्रकाश)—जब किसी ग्रहस्थ ज्योतिर्विदाभास के पास जाके कहते हैं कि महाराज इसको क्या है? तब वह कहते हैं इस पर सूर्यादि क्रूर ग्रह चढ़े हैं। जो तुम इनकी शान्ति, पाठ, पूजा, दान कराओ तो इसको सुख हो जाए, नहीं तो बहुत पीड़ित और मर जाये तो भी आश्चर्य नहीं है।

उत्तर-कहिए ज्योतिर्विद्! जैसी यह पृथ्वी जड़ है, वैसे ही सूर्य आदि लोक हैं। वे ताप और प्रकाशादि से भिन्न कुछ नहीं कर सकते। क्या ये चेतन हैं, जो क्रोधित होके दुःख और शान्त होकर सुख दे सकें। भोली-भाली जनता को ठगने के लिये ग्रहों का प्रकोप का डर उनके दिलों में बिठा रखा है। प्रत्येक ग्रह जड़ हैं और पृथ्वी से लाखों गुना बड़े हैं फिर वह एक छोटे से मनुष्य पर कैसे चढ़ सकते हैं।

उदाहरण-दो नवयुवक एक बलिष्ठ शरीर बालक और दूसरा मरियल-सा कमजोर शरीर वाले ज्योतिष के पास जाकर पूछने लगे, महाराज हम पर कौन से ग्रह चढ़े हैं, जो हमारे कोई भी कार्य सिद्ध नहीं होते। ज्योतिष ने बलिष्ठ शरीर वाले युवक से कहा तुम पर सूर्य ग्रह मेहरबान है, तुम्हारा कुछ भी अनिष्ट नहीं होगा और दूसरे कमजोर शरीर वाले युवक से कहा कि तुम पर सूर्य ग्रह चढ़े हैं तुम्हारा यह अनिष्ट करेंगे, जल्दी पूजा-पाठ, दान करो हम सूर्य ग्रह को शान्त कर देंगे।

यह सब कौतूहल एक विद्वान् युवक देख रहा था, उससे रहा नहीं गया वह चुप भी कैसे रह सकता था ऋषि दयानन्द का भक्त जो था। उसने ज्योतिषी से कहा मैं अभी इन दोनों की परीक्षा ले सकता हूँ क्या? ज्योतिषी जी ने अहंकार मे कहा अवश्य-अवश्य हमारा कथन कभी गलत नहीं होता है। अस्तु जून का महीना था, दोपहर का समय था, विद्वान् युवक ने दोनों पीड़ित युवकों से कहा मैं तुम्हारी परीक्षा लूंगा दोनों के कपड़े उतरवाये और नंगे पैर दोनों को पक्के फर्श पर खड़ा कर दिया और आधा घण्टा खड़े रहने को कहा। किन्तु यह क्या जो बलिष्ठ शरीर वाला युवक था जिस पर सूर्य ग्रह मेहरबान था वह चक्कर खाकर गिर गया और कमजोर शरीर वाला किन्तु दृढ़ इच्छा वाला वह युवक जिस पर सूर्य ग्रह कुपित थे ज्यों का त्यों खड़ा रहा। अब आर्य युवक ज्योतिष से कहने लगा कहिए महाराज प्रत्यक्ष में आपकी भविष्यवाणी असफल क्यों हुई है। वास्तव में सूर्य ग्रह जड़ है और ताप से अधिक कुछ नहीं दे सकता है। सूर्य की गरमी का प्रभाव दोनों पर बराबर पड़ा किन्तु सहन क्षमता में दोनों अलग-अलग थे। इसलिए नवग्रहों का ज्योतिष भ्रम है, धोखा है।

शनिग्रह-शनिग्रह पृथ्वी से लाखों मील दूर है और कई लाख गुना बड़ा है-बताइए ज्योतिष महाराज वृह शनिग्रह एक छोटे से आदमी पर कैसे लग सकता है, शनि ग्रह के लगने से तो सारी पृथ्वी ही दब जायेगी। वास्तव में ईश्वरीय व्यवस्था में प्रत्येक ग्रह जड़ है और अपनी-अपनी धुरी पर केन्द्रित है। इस सृष्टिक्रम की व्यवस्था को बनाए रखते हैं। यह मानव जगत् का उपकार ही करते हैं, किन्तु अपकार कभी नहीं करते हैं।

उदाहरण-आश्चर्य होता है शनिवार को कुछ लोगों का धन्धा खूब चलता है। वह एक बाल्टी में तेल लेकर जगह-जगह चौराहों पर घरों में शनि के नाम से लोगों को ढगते रहते हैं और अन्धविश्वासी लोग उनकी बाल्टी को सिक्कों से भर देते हैं। क्या शनिदेव मांगने वाले लोगों पर मेहरबान होते हैं। नहीं, यह उनका धन हरण का मार्ग है और अधिक आश्चर्य होता है अब शनि को देवता बनाकर उनकी मूर्ति भी बना दी गई है और मन्दिर भी बना दिया गया है। ईश्वर भारतवासियों को सुमति दें।

परिवारों के प्रत्येक शुभकार्यों में शुभदिन मुहूर्त निकालना भी भ्रम है-वास्तव में पृथ्वी पर सब दिन बराबर होते हैं और एक जैसे होते हैं। ऋतुओं के अनुसार व जलवायु के अनुसार अपना प्रभाव दिखाते हैं। वैसे प्रत्येक शुभकार्य करने के लिये प्रत्येक दिन शुभ होता है किन्तु आप अपना शुभकार्य तब करे जब ऋतु अनुकूल हो, स्वास्थ्य अनुकूल हो, परिवार सुख-शान्ति में हो, वह दिन किसी भी समय शुभकार्य के लिए शुभ होता है।

एक ज्वलन्त उदाहरण-श्री रामचन्द्र जी कोई साधारण पुरुष न थे वह मर्यादा पुरुषोत्तम थे और उनके कुलगुरु वशिष्ठ भी ऋषि ब्रह्मा के पुत्र थे, श्रीराम को गद्दी पर बैठाने का मुहूर्त वशिष्ठ ऋषि ने निकाला था। इसी मुहूर्त में श्रीराम को चौदह वर्ष के लिये वनवास जाना पड़ा था। पीछे श्रीराम के पिता दशरथ को पुत्र वियोग में मृत्यु हो गई। तीनों रानिया विधवा हो गयीं, आगे चलकर सीता का हरण हुआ, विशिष्ट की शुभ मुहूर्त शुभकार्य हेतु व्यर्थ गया। इस ऐतिहासिक उदाहरण से स्पष्ट हो जाता है कि शुभ व अशुभ मुहूर्त ज्योतिष का चलन भी भ्रामिक है।

गणित ज्योतिष अन्त में-वेदों की शिक्षा के आधार पर गणित ज्योतिष सत्य है, गणित ज्योतिष द्वारा हम सौ वर्ष पहले बता सकते हैं कि क्या होगा। जैसे कि तिथियों का हिसाब, दिनों का हिसाब ऋतुओं का परिवर्तन, सूर्य व चन्द्रग्रहण। चूँकि यह सारी चीजें चाँद, सूर्य और जमीन इन तीनों को नियमानुसार गति पर निर्भर है, जिसमें एक पल का भी अन्तर नहीं आता। अतः हम सौ साल पहले बतला सकते हैं कि अमुक तिथि, अमुक वार को अमुक ऋतु में और अमुक समय में सूर्य व चन्द्रग्रहण होगा तथा कारण को देखकर कार्य का अनुमान अर्थात् कारण को देखकर होने वाले काम का अनुमान आदि।

आर्यसमाज के चौथे नियम में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी कहते हैं कि-सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

सम्पर्क-गढ़ निवास मोहकमपुर, देहरादून (उत्तराखण्ड)

मो० 9411512019, 9557641800

स्वामी श्रद्धानन्द हमारे प्रेरणास्रोत

□ डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह, चन्द्रलोक कॉलोनी, खुर्जा, मो० 8979794715

बात उत्तरप्रदेश के बरेली शहर की है, जहाँ पर नानकचन्द जी अंग्रेजी शासन में कोतवाल थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती के व्याख्यान हो रहे थे। यहाँ का प्रबन्ध नानकचन्द जी का ही था। महर्षि दयानन्द सरस्वती के व्याख्यानों का



प्रभाव नानकचन्द जी पर पड़ा। उससे प्रभावित होकर उन्होंने महर्षि के व्याख्यान सुनने को अपने पुत्र मुंशीराम से कहा कि बेटा मुंशीराम एक दण्डी स्वामी आए हैं, ऊँचे विद्वान् हैं, योगिराज हैं, उनके उपदेश सुनो, मेरे साथ चलना।

मुंशीराम अंग्रेजी शिक्षा में ढले थे। मन्दिर व पुजारियों के ढोंग देख नास्तिक बने हुये थे। सोचने लगे संस्कृत पढ़ा साधु इतनी ऊँची बातें कैसे बता सकता है? मुंशीराम नास्तिक तो थे ही मांस, मद्य व दुर्व्यसनों में भी रत थे। पिता के आग्रह पर जब महर्षि का व्याख्यान सुनने आए। व्याख्यान 'ओ३म्' के निज नाम पर था। मुंशीराम ऋषि दयानन्द का व्याख्यान सुनकर अत्यन्त भावविभोर हो गये। इतना प्रभावित हुए कि जीवन ही बदल गया और उनके अन्दर ईश्वर के प्रति आस्तिकता जाग्रत हो गयी। दुर्व्यसनों को एकदम त्याग दिया। उन्होंने महर्षि दयानन्द सरस्वती के पास पादरी स्कॉट को तथा तीन यूरोपियनों को भी बैठे हुये देखा तो महर्षि दयानन्द में उत्सुकता और बढ़ गई। ईश्वर में श्रद्धा बढ़ने लगी। कुछ समय ही प्रवचन सुना था कि मन में आश्चर्य हुआ कि केवल संस्कृत का विद्वान् होने से ही इतनी युक्तियुक्त बातें कर रहे हैं।

मुंशीराम ने वकालत पढ़ते समय ही सत्यार्थप्रकाश पढ़ा। तत्पश्चात् आर्यसमाज वच्छोवाली के सदस्य बने। जालन्धर में वकालत करने लगे। इस समय वह तामसिक वृत्तियों को छोड़कर सात्त्विक जीवन, सात्त्विक भोजन व वस्त्र आदि का प्रयोग करने लगे थे। कोई दुर्व्यसन नहीं था। सरदार अर्जुनसिंह जी जो सरदार भगतसिंह के दादा थे, इनके मुंशी बने।

मुंशीराम जी की पुत्री का नाम वेदकुमारी था वह मिशन स्कूल में पढ़ती थी। एक दिन उसने स्कूल में बोले जाने वाला गीत मुंशीराम जी को सुनाया। गीत था—“ईसा-ईसा बोल तेरा क्या लगेगा मोल, ईसा मेरा कृष्ण-कन्हैया,

ईसा मेरा राम रमैया” गीत को सुनकर मुंशीराम जी ने संवत् 1947 में पाठशाला खुलवायी जो आज एक बड़ा विद्यालय कन्या महाविद्यालय के रूप में शिक्षा का प्रकाश कर रहा है। 31 अगस्त 1895 को इनकी पत्नी शिवदेवी की मृत्यु हो गई। इनके चार सन्तानें थी-वेदकुमारी, अमृतकला, इन्द्र व हरिश्चन्द्र। मुंशीराम जी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के चार वर्ष तक लगातार प्रधान रहे।

आज जो गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय विश्व में भारतीय संस्कृति व ज्ञान-विज्ञान का प्रकाश कर रहा है उसकी नींव व स्थापना गुरुकुल के रूप में महात्मा मुंशीराम ने ही की थी। जब ईसाई मिशनरियाँ भारतीय संस्कृति को अर्थहीन बता रही थी और चारों मिशनरी के स्कूल स्थापित कर रही थी। ईसाई मत का प्रचार कर हिन्दुओं का मतान्तरण कर रही थी।

अंग्रेजी शासन का पूरा सहयोग मिशनरियों को था। ऐसे में मुंशीराम जी ने गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना अत्यधिक परिश्रम और भागदौड़ करके की थी। इन्होंने अपना सब कुछ गुरुकुल को सौंप दिया था। जालन्धर में कोठी थी वह भी गुरुकुल को ही समर्पित कर दी थी।

अंग्रेज सरकार आर्यसमाजियों को बागी समझती थी और आर्यसमाजियों के पीछे खुफिया पुलिस लगाकर रखती थी। स्वामी श्रद्धानन्द सन् 1919 में राजनीति में आगये और कांग्रेस का नेतृत्व किया। गोरखों की संगीनों के आगे से सीना ताने हुए जुलूस की अगवानी कर आगे बढ़ गये वह बेधड़क व निडर थे। देशभक्ति की मिसाल थे। स्वामी श्रद्धानन्द ने अछूतों के लिये बहुत कार्य किया। शुद्धि आन्दोलन चलाया। 1923 में आगरा में हिन्दू शुद्धि सभा की स्थापना की। मलकाने राजपूतों की शुद्धि की मोपलाओं द्वारा मालावार में हिन्दुओं को मुसलमान बनाया था उन्हें पुनः हिन्दू बनाया। दिल्ली से 'अर्जुन' व 'तेज' अखबार निकाले।

23 दिसम्बर 1926 को एक व्यक्ति इस्लाम पर बात करने के उद्देश्य से स्वामी जी से मिलने आया। सेवक ने उसे रोका भी, परन्तु स्वामी जी ने आवाज सुनकर उसे बुला लिया था। इस्लाम पर बात करने के लिये कहने पर स्वामी

जी ने कहा—मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं है, स्वस्थ हो जाऊँगा फिर बात करूँगा। इसका नाम अब्दुल रशीद था। उसने पानी मांगा सेवक पानी लेने चला गया। अचानक ही उसने पिस्तौल निकालकर तीन फायर कर दिये। सेवक धर्मसिंह ने पकड़ने का प्रयत्न किया उसको भी एक गोली लग गई। स्वामी जी के सैकेट्री धर्मपाल विद्यालंकार ने इस व्यक्ति को दबोच लिया। पुलिस उस व्यक्ति को पकड़कर गिरफ्तार करके ले गई।

इस प्रकार से एक महान् क्रान्तिकारी शुद्धि का योद्धा भारतीय संस्कृति का दीप बुझ गया। स्वामी श्रद्धानन्द ऐसे तूफान थे जिसने उत्तरी भारत में शुद्धि का ध्वज बुलन्दियों पर पहुँचा दिया था। उस समय चारों ओर शुद्धि की हवा बहुत तेज चली थी हो सकता है स्वामी और रहते तो पूरा भारत शुद्ध होकर समस्त मुसलमान जो जबरन तलवार के बल से हिन्दुओं से मुसलमान बनाये गये थे अपने धर्म में वापिस आ जाते। घर वापसी का वह तूफान वहीं रुक गया। स्वामी जी ने देश जाति धर्म शिक्षा संस्कृति नारी उत्थान, अछूतोद्धार व समाज के उत्थान के लिए जीवन पर्यन्त कार्य किया व संघर्षरत रहे। उस महान् बलिदानी को कभी भी भुलाया नहीं जा सकता।

प्रेरक वचन



- यदि अच्छाई के पक्ष में नहीं खड़े होंगे तो बुराई स्वाभाविक ही बढ़ेगी।
- काम मुश्किल नहीं होता, मुश्किल तो अनुशासन होता है।
- अनुशासन के बिना कोई लक्ष्य हासिल नहीं किया जा सकता।
- अभिमान की अपेक्षा नम्रता से अधिक लाभ होता है।
- शान्ति समृद्धि की पहली शर्त है।
- मन की प्रसन्नता ही व्यवहार में उदारता बन जाती है।
- कभी-कभी मौन शब्दों से अधिक शक्तिशाली होता है।
- उत्सव-आनन्द, उमंग और उत्साह के स्रोत होते हैं।
- जीवन की दिशा बदलनी है तो कर्म की दिशा बदलें।
- आत्मसम्मान सभी गुणों की आधारशिला है।
- जिस कार्य में आत्मा का पतन हो वही पाप है।
- व्यवहारकुशलता की कला से किसी को भी साधा जा सकता है।

संकलन—भलेराम आर्य, गांव सांघी, जिला रोहतक, मो० 9416972879

गायत्री की साधना ही ईश्वर प्राप्ति का मार्ग है

आत्मा का स्वाभाविक स्वरूप अत्यन्त शुद्ध, पवित्र, अलौकिक और दिव्य है। उसकी अन्तिम अवस्था धर्माचरण और ईश्वर साक्षात्कार है। सद्बुद्धि प्राप्ति का एक अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण वैज्ञानिक आधार गायत्री है। इस महामन्त्र के एक-एक अक्षर में जो गूढ़ ज्ञान भरा हुआ है, वह इतना उज्ज्वल है कि उसके प्रकाश में अज्ञान का (अन्धेरा) अन्धकार नष्ट हो जाता है। इन चौबीस अक्षरों में ऐसा अद्भुत ज्ञान-भण्डार भरा हुआ है, जिसमें दर्शन, धर्म, नीति, विज्ञान, शिक्षा, शिल्प आदि सभी पर्याप्त मात्रा में मौजूद हैं। गायत्री सद्बुद्धि दायक गुरुमन्त्र है। सत् तत्त्व की वृद्धि करना गायत्री का प्रधान कार्य है और शरीर का कायाकल्प करना एक वैज्ञानिक कार्य है। गायत्री के द्वारा सतोगुण बढ़ता है और निम्न कोटि के तत्त्वों का निवारण हो जाता है। गायत्री साधना के अन्तःकरण पर पड़े हुए कुसंस्कारों के आवरणों को हटाया जाता है। आत्मा का सहज ईश्वरीय रूप प्रकट हो जाता है।

गायत्री उपासना वस्तुतः ईश्वर उपासना का अति उत्तम मार्ग है। इस मार्ग पर चलने वाले व्यक्ति जीवन के चरम लक्ष्य ईश्वर प्राप्ति तक पहुँचते हैं। ब्रह्म और गायत्री में केवल शब्दों का अन्तर है वैसे वे दोनों एक ही हैं। ब्रह्म ही गायत्री है और उसकी उपासना ब्रह्म प्राप्ति का सर्वोत्तम मार्ग है। गायत्री साधना आत्मबल प्रदान करती है तथा साधक को सत्संग, प्रेम और भक्ति का आत्मानन्द सहज प्राप्त होता है।

आर्यसमाज के जन्मदाता स्वामी दयानन्द के गुरु प्रज्ञाचक्षु ब्रह्मर्षि विरजानन्द ने बड़ी तपश्चर्या पूर्वक गंगा तीर पर तीन वर्ष तक गायत्री का जप किया था। इस अन्धे संन्यासी ने अपने तपोबल से अगाध विद्या और अलौकिक ब्रह्मतेज प्राप्त किया था।

आर्यजगत् के प्रसिद्ध महात्मा सर्वदानन्द जी का कथन है कि “गायत्री मंत्र द्वारा प्रभु का पूजन सदा से आर्यों की रीति रही है।” सद्ज्ञान का न होना ही दुःख है, सद्ज्ञान की उपासना ही गायत्री साधना है। अतः अभ्यास और वैराग्य से मन के पवित्र होने पर निर्मल हृदय मन्दिर में उसके दर्शन होते हैं।

—जगरूपसिंह छिक्कारा आर्य, म.नं. बी. 103 फ्लोवर 10, स्पेज परिवी सेक्टर-72, गुरुग्राम-122001 (हरयाणा)

गहरे में पैठ, मोती मिलेंगे

□ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

पिछले ग्रीष्मावकाश में हम अपनी पंजाब यात्रा के दौरान स्वामी श्रद्धानन्द की जन्मभूमि तलवन (जालन्धर) भी गए थे। उसी दौरान हमने संकल्प लिया था कि यहाँ दोबारा प्रचार के लिए अवश्य आयेंगे। अब 23 दिसम्बर को स्वामी जी के बलिदान दिवस पर प्रातः 9 बजे तलवन में उसी स्थान पर यज्ञ प्रचार करने का कार्यक्रम बना जहाँ राष्ट्र की उस महान् विभूति ने जन्म लिया था। पिछली प्रचार यात्रा में पंजाब के कुछ गाँव में हमारा प्रचार बड़ा सफल रहा। लेकिन हम स्वामी जी के जन्म स्थान की दशा और वहाँ प्रचार की दशा देखकर सन्न रह गये थे। दोबारा वहाँ प्रचार करके वृत्तान्त लिखने का विचार था, लेकिन आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यालयाधीक्षक श्री शेरसिंह जी ने एक से अधिक बार यह कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान दिवस पर लेख भेजो। उनके कहने को न टाल सका। श्री शेरसिंह व श्री सत्यवान ने विपरीत परिस्थितियों में अपने सहयोगियों से मिलकर सड़क से भी कार्यालय कार्य का संचालन किया है। आचार्य बलदेव जी कहते थे कि स्वामी ओमानन्द जी कार्यालय व फील्ड दोनों को मजबूत रखने की कहा करते थे। आज मा० रामपाल आर्य के नेतृत्व में ये दोनों कार्य हो रहे हैं।



पिछले प्रचार के दौरान तलवन में बहुत घूमने पर दस से भी कम व्यक्ति उपस्थित हुए थे। उनमें एक मध्य आयु के सरदार श्री जसविन्द्र ने प्रचार के उपरान्त जलपान करवाया। प्रचार के दौरान उनकी झुकी गर्दन बता रही थी कि उन्हें इस बात की शर्मिन्दगी है कि लोग क्यों न एकत्रित हुए। हम उनका फोन नंबर ले आये थे। अब लगभग छह महीने के बाद जब उनसे फोन पर बात हुई तो उन्होंने बड़ी आत्मीयता से बात की व आने का निमन्त्रण दिया। इतना ही नहीं गुरुकुल करतारपुर (जालन्धर) के युवा आचार्य उदयन भी हमारी सूचना पर वहाँ जाकर उस सज्जन व अन्य लोगों से स्वयं ही जाकर मिल जाए तथा हमें आश्वासन दिया कि गुरुकुल के ब्रह्मचारियों को भी साथ लेकर चलेंगे। इसीलिए तो हमने इस लेख का शीर्षक बनाया 'गहरे में पैठ, मोती

मिलेंगे'।

अभी हाल में हम चौधरी चरणसिंह के गाँव मढ़ैया नूरपुर जनपद हापुड़ (उत्तर प्रदेश) में प्रचार करके आए। जातिवाद के जहर से दूर, ईमानदार, किसानों के सच्चे हितैषी व दृढ़ ऋषिभक्त चौधरी साहब के गाँव में बड़ा सफल प्रचार रहा। जब आने लगे तो उनके परिवार में 80 वर्षीय सज्जन पुरुष की आँखों में आँसू भर आए। ये उनके भाई के पोते हैं। पिछले दिनों हमने पानीपत में एक बड़ा कार्यक्रम किया उसमें सोरम (उत्तर प्रदेश) से स्वर्गीय चौधरी कबूल सिंह के पोते भाग लेने आए थे जिनके परिवार ने सर्वखाप के इतिहास को सुरक्षित रखा। उन्होंने हमें बताया था कि कभी हमारे गाँव में सर्वखाप पंचायत हुई थी जो तीन दिन तक चली थी व तीनों दिन अलग-अलग वर्ग से अध्यक्ष बनाया गया। कभी उसी ऐतिहासिक गाँव सोरम में एक पिछड़ा वर्ग के भाई श्री मुंगाराम ने चौ० चरणसिंह का थाल में 151 रुपये से व पगड़ी बांधकर सम्मान किया था। इस वर्ग को आज की प्रचलित भाषा में वाल्मीकि कहते हैं।

पिछले दिनों आर्यसमाज के गढ़ हरयाणा में जाटों को आर्यसमाज से अलग करने के भयंकर षड्यन्त्र रचे गए, जातिवाद का जहर घोला गया। इस सारे प्रकरण में एक तथ्य हमारे सामने आया कि जहाँ जातिवाद का जहर घुलेगा वहाँ धर्मांतरण भी बढ़ेगा। लेकिन जाति का नेता बनने की भूख रखने वाले इन नेताओं को इसकी क्या परवाह? गोकुला जाट जैसे वीरों के बलिदान क्यों हुए? कोई इनसे पूछे तो!

जातिवाद व धर्मांतरण को रोककर राष्ट्र को सुदृढ़ बनाने का कार्य केवल आर्यसमाज कर सकता है। कभी 'भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा' के प्रधान स्वामी श्रद्धानन्द थे। पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति ने लिखा है कि इस सभा ने 1923 और 1931 के बीच 8 वर्षों में 2 लाख 9 मुस्लिमों को आर्य धर्म में वापसी करवाई, 60 हजार लोगों को विधर्मी होने से बचाया, 127 शुद्धि सम्मेलन किये, 156 पंचायतें हुईं, 81 बड़े-बड़े सहभोज किए गए। आर्यसमाजी इस इतिहास से प्रेरणा लें। दूसरे, मुझे उनका यह विचार बड़ा प्रेरणादायक लगता है जिसके अनुसार वे नरम दल वालों के लिए 'भिक्षार्थी' गरम दल वालों के लिए 'सुखार्थी' शब्दों का प्रयोग करते थे। अतः उग्र व्यग्र होकर उथल-पुथल की

क्रमशः पृष्ठ 15 पर.....

जब काकोरी षड्यन्त्र केस हुआ

काकोरी षड्यन्त्र केस अपने समय का सबसे बड़ा क्रान्तिकारी मुकदमा था। इस मुकदमे में बीस देशभक्तों को सजा मिली। पं० रामप्रसाद बिस्मिल, ठाकुर रोशनसिंह, राजेन्द्र लाहिड़ी तथा अशफाकुल्ला खाँ को फांसी दे दी गई। यह फांसी 19 दिसम्बर 1927 को दी गई तथा वे शहीद हो गये। शचीन्द्रनाथ सान्याल तथा शचीन्द्रनाथ बक्शी को आजन्म कालेपानी की सजा मिली। श्री मन्मथनाथ गुप्त को 14 साल, राजकुमार सिंह, रामकृष्ण खत्री, योगेश चटर्जी आदि को दस-दस साल तथा शेष को सात-सात साल तथा पांच-पांच साल की सजाएँ हुईं। अपील में कुछ लोगों की सजाएँ बढ़ाई भी गईं।

इस मुकदमे में क्रान्तिकारियों को फंसाने के लिये कोई कसर नहीं छोड़ी। सरकार ने लाखों रुपये देकर सबसे अच्छे वकीलों को नियुक्त किया। स्पेशल मजिस्ट्रेट, स्पेशल जज भी नियुक्त किये गये।

दूसरी ओर सफाई के लिए प्रभावशाली डिफेन्स कमेटी बनाई गई थी, जिसमें पं० जवाहरलाल नेहरू, पं० मोतीलाल नेहरू, पं० गोविन्द वल्लभ पन्त, मोहनलाल सक्सेना आदि थे।

सफाई के वकीलों में कलकत्ते के प्रसिद्ध बैरिस्टर चौधरी, लखनऊ के प्रोफेसर कृपाशंकर हजेला, हरकरणनाथ मिश्र तथा उत्तर प्रदेश के (बाद में मुख्यमंत्री) चन्द्रभानु गुप्त भी थे।

इस षड्यन्त्र केस का 'काकोरी केस' के नाम से मशहूर होने का आधारभूत कारण यह था कि हरदोई-लखनऊ के बीच जिस स्टेशन के पास पैसंजर ट्रेन को रोक कर रेलवे का खजाना लूटा गया था, उस स्टेशन का नाम काकोरी था। लखनऊ के स्पेशल मजिस्ट्रेट तथा स्पेशल जज ने उस अप्रसिद्ध छोटे से स्टेशन को इतिहास के पन्ने पर लाकर बैठा दिया। 9 अगस्त 1925 के दिन 8 डाउन पैसंजर, गार्ड जगन्नाथ प्रसाद के चार्ज में थी। ट्रेन डकैती से सम्बन्धित सरकारी गवाहों में जिसने सर्वाधिक समय तक क्रान्तिकारियों को देखा, वह था गार्ड जगन्नाथ प्रसाद। वह डकैती शुरू होने के समय से लगातार पैंतीस मिनट तक

□ आनन्ददेव शास्त्री, पूर्व प्रवक्ता, दिल्ली सरकार देखता रहा। शेष गवाहों में से किसी ने भी क्रान्तिकारियों को दो चार सैकेंड से ज्यादा नहीं देखा। कुछ लोगों ने डकैती शुरू होने से पहले क्रान्तिकारियों को साधारण यात्री की स्थिति में कुछ क्षणों तक देखा था।

वस्तुतः घटना इस प्रकार थी—सन् 1925 तक उत्तर प्रदेश में क्रान्तिकारी संगठन मजबूत हो गया था तथा संगठन में तेजी भी आ गई थी। जुलाई के अन्त में क्रान्तिकारियों को सूचना मिली कि जर्मनी से पिस्तौलों का चालान आ रहा है। कलकत्ता बन्दरगाह पर पहुंचने से पहले ही नकद रुपया देकर उसे प्राप्त करना था। एतदर्थ काफी रुपयों की आवश्यकता पड़ी तथा पार्टी के सामने डकैती के अलावा और कोई चारा नहीं था।

क्योंकि पार्टी निर्णय कर चुकी थी कि भविष्य में किसी की व्यक्तिगत सम्पत्ति नहीं लूटी जायेगी, इसलिए लखनऊ के पास ट्रेन रोक कर सरकारी खजाना लूटने की योजना बनाई गई। इसकी रूपरेखा सुनकर नौजवानों की तबियत फड़क उठी। उन दिनों नौजवान बहुत चंचल हो उठे थे तथा कुछ कर गुजरने के लिए उतावले हो रहे थे। 'सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है' के गाने लग गये थे तथा उनका मन उसी ऊंचे स्वर में बंध गया था। क्रान्तिकारियों में मन्मथनाथ गुप्त, कुन्दन लाल गुप्त, चन्द्रशेखर आजाद ने शचीन्द्र बक्शी के सामने प्रश्न उठाया था कि अगर रेल का गार्ड अंग्रेज हुआ तो क्या उसे जिन्दा छोड़ा जाएगा?

बक्शी का उत्तर था कि हाँ 'उस गार्ड के लिए एक कारतूस खर्च किया जाएगा'। जब उनके साथियों ने खुशियाँ प्रकट करनी शुरू की तब बक्शी ने अपने होठों पर एक अंगुली रखकर उन्हें रोक कर कहा था—“चुप! यह बात अपने में ही रहनी चाहिए। यदि रामप्रसाद बिस्मिल को पता चल गया तथा कहीं उन्होंने मना कर दिया तो सारा करा-कराया बंटधार हो जायेगा।”

यहाँ पर यह बताना जरूरी है कि क्रान्तिकारी लोग इतने खूंखार नहीं थे। बात दरअसल यह थी कि अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध क्रान्तिकारियों के मन में संवेदना इतनी

तीव्र थी कि बदला लेने की भावना सदा जागृत रहती थी।

क्रान्तिकारियों में अकेले अशफाकुल्ला खां ने इस योजना का विरोध किया तथा आखिर तक करते रहे। उनका कहना था कि हमारा दल अभी इतना मजबूत नहीं है कि हम ब्रिटिश सरकार को खुली चुनौती दे सकें। लेकिन कोई भी यह चेतावनी सुनने के मूड में नहीं था। अशफाक यही रट लखनऊ तक लगाते रहे तथा काकोरी स्टेशन पर पहुँचकर भी पं० रामप्रसाद बिस्मिल से बोले-“मान जाओ राम, अब भी लौट चलो, यह काम नहीं होना चाहिए।”

नतीजा यह हुआ कि डकैती का काम शुरू करने का भार पं० रामप्रसाद बिस्मिल ने अशफाक की बजाय शचीन्द्रनाथ बक्शी को दे दिया। शचीन्द्रनाथ बक्शी ने रामप्रसाद बिस्मिल को बताया कि अशफाक तथा राजेन्द्र लाहिड़ी को साथ लेकर मैं सैकेंड क्लास की जंजीर खींचकर ट्रेन रोक दूँगा तथा गार्ड को नीचे उतारकर पकड़ लूँगा। पं० रामप्रसाद ने इस सुझाव को पसन्द किया तथा बताया कि बचे हुए छह साथियों को लेकर वे तीसरे दर्जे में बैठेंगे तथा ट्रेन रुकने पर आप लोगों के पास आ जायेंगे।

काकोरी स्टेशन पर जब शचीन्द्रनाथ बक्शी ने लखनऊ के लिए तीन सैकेंड क्लास के टिकट खरीदने के लिए नोट आगे बढ़ाया, असिस्टेंट स्टेशन मास्टर घूरकर बक्शी के चेहरे को ध्यान से देखने लगा। (स्मरण रहे उस समय सैकेंड क्लास में आम आदमी यात्रा नहीं कर सकते थे, गरीबी के कारण) उसे महान् आश्चर्य हुआ कि इस छोटे से स्टेशन से तीन सैकेंड क्लास के टिकट खरीदने वाला यह व्यक्ति कौन है? बक्शी के हाथ में रुमाल था तथा वह अनायास ही दूसरी तरफ मुंह फेरकर रुमाल से मुंह पोछने लगा। जब उसने तीन टिकट तथा बचे पैसे वापिस लौटाये, उस समय भी वह श्री बक्शी को घूर-घूरकर देखता रहा, किन्तु श्री बक्शी ने उसे फिर भी मौका नहीं दिया तथा मुंह पोछते हुए ही एक हाथ से टिकट तथा पैसे लेकर आगे चल दिये। श्री बक्शी ने प्लेटफार्म पर आकर अशफाक उल्ला तथा राजेन्द्र लाहिड़ी को इशारे से बुलाया तथा उन्हें अपने साथ ही रहने को कहा।

पैसेंजर ट्रेन आई तथा ये तीनों सैकेंड क्लास का खाली डिब्बा देखकर उसमें बैठ गये। गाड़ी चल दी। इतने में एक यात्री श्री बक्शी के पास आकर बैठ गया। श्री बक्शी तुरन्त

घूमकर जंगल की तरफ देखने लगे। सामने की सीट पर अशफाकुल्ला तथा राजेन्द्र लाहिड़ी बैठे थे। डिब्बे में बिजली का प्रकाश था। जब ट्रेन सिगनल के पास पहुँच गई, श्री बक्शी ने अपने साथियों की तरफ मुड़कर पूछा, “जेवरों का बक्शा कहाँ रह गया है?” अशफाकुल्ला ने तुरन्त उत्तर दिया, “ओ हो वह तो काकोरी में ही छूट गया है।” इतने में श्री बक्शी ने अपने पास लटकती जंजीर खींच दी। इसके बाद राजेन्द्र लाहिड़ी ने अपने पास लटकती जंजीर खींच दी। जंजीर खींचने के बाद तुरन्त श्री बक्शी ने दरवाजा खोला तथा बाहर खड़े हो गये।

गाड़ी रुक गई। ये तीनों नीचे उतर गये तथा काकोरी की तरफ चल पड़े। तीन-चार डिब्बों को पार करने के बाद गार्ड साहब मिले, जो इन लोगों की तरफ ही आ रहे थे। गार्ड साहब ने पूछा, “जंजीर किसने खींची?”

श्री बक्शी ने चलते-चलते बताया कि जंजीर मैंने खींची है। गार्ड श्री बक्शी के साथ हो लिया तथा श्री बक्शी को रुकने को कहा। उत्तर में श्री बक्शी ने बताया, “काकोरी में हमारा जेवरों का बक्शा छूट गया है, हम उसे लेने जा रहे हैं।”

इतने में सभी लोग गार्ड के डिब्बे तक पहुँचकर रुक गये। तब तक इनके अन्य साथी भी वहाँ पहुँच गये थे। इन लोगों ने पिस्तौल के फायर के साथ यात्रियों को सावधान किया कि कोई भी यात्री नीचे न उतरे, क्योंकि हम सरकारी खजाना लूट रहे हैं।

इतने में श्री बक्शी की नजर गार्ड साहब पर पड़ी, जो श्री बक्शी के बगल में खड़े थे तथा इंजिन की तरफ हरी बत्ती दिखा रहे थे। श्री बक्शी ने उसकी बगल में पिस्तौल की नली लगा दी तथा एक हाथ से उसकी बत्ती छीन ली। बत्ती को जमीन पर पटकते हुए श्री बक्शी ने उसे ठोकर मारकर एक तरफ फेंक दिया तथा गार्ड से कहा, गोली मार दूँगा, हरी बत्ती क्यों दिखा रहा था?

गार्ड जगन्नाथप्रसाद ने हाथ जोड़ते हुए गिड़गिड़ाकर कहा, “हुजूर मेरी जान बक्शा दीजिए।”

बक्शी ने उसे डांटते हुए कहा, “घास पर लेट जाओ, जब तक मैं ना कहूँ मत उठना। यदि बीच में उठे तो मार दिये जाओगे।” गार्ड तुरन्त घास पर लेट गया।

क्रमशः अगले अंक में...

ब्रह्मचर्य एवं आर्यसमाज के अनूटे नुस्खे

□ सूबेदार करतारसिंह आर्य सेवक आर्यसमाज गोहाना मण्डी (सोनीपत)

सन्ध्या के उपासकों को भी निम्न योग्यता प्राप्त कर लेनी चाहिए— (1) शारीरिक उन्नति अर्थात् समस्त इन्द्रियाँ बलवान, पवित्र और यशवाली होनी चाहिए।

(2) मानसिक उन्नति अर्थात् हृदय देश से रहित होना चाहिये और प्राणायामादि के द्वारा उसमें प्रत्याहार की प्राप्ति की योग्यता उत्पन्न हो जानी चाहिये।

(3) आत्मिक उन्नति अर्थात् इसके लिए उपासना के पृथक् अंग वाचक (शब्द) हृदय में धारणा करने का अभ्यास करना चाहिये।

केवल ज्ञान का व केवल कर्म का सेवन करना अन्धकार में पड़ना है। सिद्धान्त यह है कि विज्ञान और कर्म दोनों का प्रयोग साथ-साथ करना चाहिये। वेदों का यह शाश्वत सिद्धान्त है जो तीनों कालों में एक जैसी उपयोगिता रखता है। ज्ञान उपलब्ध करके उसको कार्य में परिणत करना ही मनुष्य का सबसे बड़ा उद्देश्य है। इसीलिये वेद नित्योपयोगी समझे जाते हैं।

आर्यसमाज का विश्वास है कि जैसे कान से रूप का आँख से शब्द का ग्रहण नहीं हो सकता वैसे ही अनादि परमात्मा को देखना शुद्ध अन्तःकरण, विद्या और योगाभ्यास के अभाव में असम्भव है। जिस प्रकार बिना पढ़े-लिखे विद्या के प्रयोजन प्राप्त नहीं होते, उसी प्रकार योगाभ्यास और विज्ञान के बिना परमात्मा भी नहीं दीख सकता।

विदुर जी कहते हैं कि हे धृतराष्ट्र! इस संसार में दूसरे को निरन्तर प्रसन्न करने के लिए प्रिय बोलने वाले खुशामदी लोग बहुत हैं, परन्तु सुनने में अप्रिय विदित हो और वह कल्याण करने वाला बचन हो उसको कहने व सुनने वाला पुरुष दुर्लभ हैं। क्योंकि सत्पुरुषों को योग्य है मुख के सामने दूसरे का दोष कहना और अपना दोष सुनना, परोक्ष में दूसरे के गुण सदा कहना और दुष्टों की यही रीति है कि सम्मुख में गुण कहना और परोक्ष में दोषों का प्रकाश करना। जब तक मनुष्य दूसरे से अपने दोष नहीं सुनता वा कहने वाला नहीं कहता तब तक मनुष्य दोषों से छूटकर, गुणी नहीं होता।

कभी किसी की निन्दा न करे। जैसे-गुणों में दोष और दोषों में गुण लगाना निन्दा, और गुणों में गुण, दोषों में दोषों का कथन करना स्तुति कहाती है। अर्थात् मिथ्याभाषण का नाम 'निन्दा' और सत्य भाषण का नाम 'स्तुति' है। उपलब्धियाँ और आचरण शब्दों से कहीं ऊँचा बोला करते हैं। जो बुद्धि, धन और हित की शीघ्र वृद्धि करने हारे शास्त्र और वेद हैं, उनको नित्य सुनें और सुनावें, ब्रह्मचर्य आश्रम में पढ़े हो,

उनको स्त्री-पुरुष नित्य विचारा और पढ़ाया करें, क्योंकि जैसे-जैसे मनुष्य शास्त्रों को यथावत् जानता है, वैसे-वैसे उसका विज्ञान बढ़ता जाता और उसी में रुचि भी बढ़ती रहती है। गृहस्थाश्रम में पंचमहायज्ञ नित्य करने चाहियें—

1. ब्रह्मयज्ञ-जंगल में अर्थात् एकान्त देश जा, सावधान होके जल के समीप स्थित होके, नित्यकर्म को करता हुआ सावित्री अर्थात् गायत्री मन्त्र का उच्चारण, अर्थज्ञान और उसके अनुसार अपनी चाल-चलन को करे, परन्तु यह जप मन से करना उत्तम है। वेदादि शास्त्रों का पढ़ना-पढ़ाना, सन्ध्योपासना एवं योगाभ्यास नित्य करना ब्रह्मयज्ञ कहाता है।

2. देवयज्ञ-जो अग्निहोत्र, विद्वानों का संग सेवादि से होता है। सन्ध्या और अग्निहोत्र सायं-प्रातः दो ही काल में करें। दो ही रात-दिन की सन्धिवेला है, अन्य नहीं। न्यून से न्यून एक घण्टा ध्यान अवश्य करें। अग्निहोत्र कर्म-दोनों सन्धिवेला अर्थात् सूर्योदय के पश्चात् और सूर्यास्त से पूर्व अग्निहोत्र करने का समय है।

3. पितृयज्ञ-अर्थात् जिसमें देव विद्वान् ऋषि जो पढ़ने-पढ़ानेहारे, पितर जो माता-पिता आदि वृद्ध ज्ञानी और परम योगियों की सेवा करनी। पितृयज्ञ के दो भेद हैं—एक श्राद्ध दूसरा तर्पण। श्राद्ध अर्थात् 'श्रत' सत्य का नाम है जिससे सत्य का ग्रहण किया जाए उसको 'श्राद्ध' और जो श्राद्ध से सेवारूप कर्म किये जायें, उनका नाम 'श्राद्ध' है। जिस-जिस कर्म से तृप्त अर्थात् विद्यमान माता-पितादि पितर हों और प्रसन्न किये जाएं, उनका नाम 'तर्पण' परन्तु यह कर्म जीवितों के लिये है, मृतकों के लिए नहीं।

4. अतिथियज्ञ-अतिथि-धार्मिक, सत्योपदेश, सबके उपकारक, पूर्ण विद्वान्, सर्वत्र घूमने वाले, सन्यासी अतिथि होते हैं। उनका आसन, खान-पान, नम्रतादि से सत्कार करके उनसे सत्संग कर, अपूर्व विद्याओं को जानें।

5. बलिवैश्वदेव यज्ञ-जब हम दोनों समय भोजन करते हैं, उस समय भोजन से बचाकर किसी अपाहिज या लूले को, लंगड़े को, रोगी को, कीड़ी को, मकौड़ों को देना चाहिये। हमारे शास्त्रों में इन पांच यज्ञों को महायज्ञ कहा गया है। कितना ही अच्छा धर्म क्यों न हो जब तक उसके नियमों एवं सिद्धान्तों को अपने जीवन में धारण करके दिखाने वाले सदस्य नहीं होंगे तब तक वह धर्म उन्नति नहीं कर सकता। अतः मेरी सभी आर्य सदस्यों से प्रार्थना है कि राजनेताओं के पिछलग्गू न बनकर जात-पात से एवं स्वार्थ से बड़ा धर्म को मानें।

वेदज्ञान ही सही निदान

बिना वेद नहीं खुले भेद, इस दुनियादारी का।
वेदज्ञान ही सही निदान, इस भ्रम बीमारी का॥
वेदज्ञान बिना हमने, कितने पाप कमाये हैं।
काशी, मथुरा, हरिद्वार, के धक्के खाये हैं।
मात-पिता की सेवा कर, नहीं पुण्य कमाये हैं।
पाखंडियों के चक्कर में पड़ धोखे ही खाये हैं।
हैं वैदिक शिक्षा समाधान इस असाध्य बीमारी का।
बिना वेद नहीं खुले भेद, इस दुनियादारी का॥ 1॥
प्रगति के साथ ही हमने, दुर्गति अपनी कर ली।
कर नित्य नये अत्याचार, झोली पापों से भर ली।
सरे राह अन्याय देख, निगाह नीची अपनी कर ली।
कानों से बहरे बन, डली आँखों पर धर ली।
नहीं आत्मा जागी विलाप सुन, किसी अबला नारी का।
बिना वेद नहीं खुले भेद, इस दुनियादारी का॥ 2॥
माँब लिंग और गैंगरेप, अब नई समस्या बनगी।
भीड़ तंत्र और कानून व्यवस्था की, आपस में तनगी।
तीन-चार वर्ष की कन्या भी, भेंट हवश की चढ़गी।
घर और बाहर सुरक्षित नहीं नारी, चिंता माँ-बाप की बढ़गी।
रिश्तेदार-परिचित ही ज्यादा, करते ये काम व्यभिचारी का।
बिना वेद नहीं खुले भेद, इस दुनियादारी का॥ 3॥
किसका करें भरोसा जब, बाड़ ही खेत को खाये।
नहीं भरोसा पल भर का, कब लौट के बेटी आये।
कठोर दण्ड व्यवस्था बिन, नहीं अपराधी भय खाये।
गुण्डे तत्त्व करें मनमानी, भला मानस बचकर जाये।
सज्जन इज्जत का भय खाये, बना यह कारण लाचारी का।
बिना वेद नहीं खुले भेद, इस दुनियादारी का॥ 4॥
न्यूजपेपर और टी.वी. भी अब, नहीं अपना फर्ज निभाते।
छोटी-सी घटना का भी, वे राई का पहाड़ बनाते।
बुरे कर्म की बदबू को वे, बिल्कुल नहीं दबाते।
समाज पर क्या असर पड़ेगा, वे तनिक नहीं सकुचाते।
नहीं किसी का भय खाते कमाते हैं, कर काम व्यापारी का।
बिना वेद नहीं खुले भेद, इस दुनियादारी का॥ 5॥
सभ्य समाज बनाने हेतु, इतिहास पुराना पढ़ना होगा।
राम और कृष्ण की गाथा को, आज हमें पढ़ना होगा।
वेद की शिक्षा पा करके, आगे हमें बढ़ना होगा।
अच्छे संस्कारों के बल पर, उच्च शिखर पर चढ़ना होगा।
ऋषि दयानन्द का अमर संदेश ही, उपचार इस बीमारी का।
बिना वेद नहीं खुले भेद, इस दुनियादारी का॥ 6॥

—देशराज आर्य, सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य, 725, सै०-4,
रेवाड़ी, मो० 9416337609



अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द संन्यासी

स्वामी श्रद्धानन्द थे, ईश्वर भक्त महान्।
मानवता के पुंज थे, देशभक्त बलवान्॥
देशभक्त बलवान्, धन्य था उनका जीवन।
गाते हैं यश गान, प्रेम से उनके सज्जन॥
देश-धर्म के लिए कष्ट झेले थे भारी।
दुष्टों से न डरे, कभी भी वे बलधारी॥ 1॥



भारत में था उस समय, अंग्रेजों का राज।
होता था अन्याय तब, था सब दुःखी समाज॥
था सब दुःखी समाज, विवश थे सब नर-नारी।
आतंकित थी यहाँ, देश की जनता सारी॥
आजादी की माँग, अगर कोई करता था।
देशभक्त बलवान्, वीरनिश्चित मरता था॥ 2॥
वेदविरोधी सब जगह, होता था प्रचार।
विधर्मियों की मदद तब, करती थी सरकार॥
करती थी सरकार, हजारों हिन्दू भाई।
बन जाते थे पुत्र राम के, यवन-ईसाई॥
प्रतिदिन प्रातःकाल, गऊ माता बेचारी।
बिना खता निर्दोष, यहाँ जाती थी मारी॥ 3॥

स्वामी श्रद्धानन्द ने, जब देखा यह हाल।
दशा भयानक देखकर, उनको हुआ मलाल॥
उनको हुआ मलाल, ठोस फिर कदम उठाया।
आजादी का, महावीर ने, बिगुल बजाया॥
नहीं मौत से डरा, निराला था वह स्वामी।
सच्चाई का रहा, सदा ही सच्चा हामी॥ 4॥
आया दिल्ली नगर में, जिस दम रोलेट एक्ट।
कूद पड़े मैदान में, नेता थे परफेक्ट॥
नेता थे परफेक्ट, गजब का जोश दिखाया।
एक विशाल जुलूस निकाला, जग चकराया॥
संगीनों के सुनो, सामने तानी छाती।
आगे से छा गये, सभी गोरे उत्पाती॥ 5॥

खोला गुरुकुल कांगड़ी, भारी किया कमाल।
जग में कायम कर गए, स्वामी एक मिशाल॥
स्वामी एक मिशाल, देश को बचा लिया था।
अपना सब कुछ देश-धर्म पर चार दिया था॥
इन्द्र और हरिश्चन्द्र, पुत्र अपने दो प्यारे।
स्वामी जी ने देश-धर्म पर दोनों वारे॥ 6॥

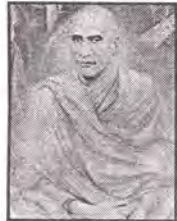
शुद्धि-चक्र ले हाथ में स्वामी श्रद्धानन्द।
विधर्मियों से भिड़ गए, नेता दानिशमन्द॥
नेता दानिशमन्द, घोर संग्राम मचाया।
पापी घबरा गए, खलों ने पाप कमाया॥
पापी अब्दुल रशीद, दुष्ट था अत्याचारी।
खल ने धोखा किया, संत को गोली मारी॥ 7॥

देश-धर्म पर हो गये, स्वामी जी कुर्बान।
आर्यकुमारो! देश का करो अरे कुछ ध्यान॥
करो अरे कुछ ध्यान, फूट पापिन को त्यागो।
करो परस्पर मेल, आर्यो अब तो जागो॥
करो वेद प्रचार, जगत् को आर्य बनाओ।
'नन्दलाल' अब काम, अरे अच्छे कर जाओ॥ 8॥

—पं० नन्दलाल निर्भय पत्रकार, भजनोपदेशक, आर्यसदन
बहीन, जनपद पलवल (हरयाणा) मो० 9813845774

1976 में आखिरी बार तत्कालीन मुख्यमंत्री ज्ञानी जैलसिंह के नेतृत्व में मनाया था बलिदान दिवस स्वामी श्रद्धानन्द का गाँव में 42 साल बाद बलिदान दिवस मनाया

हरयाणा, दिल्ली, उत्तरप्रदेश में स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती को जानने वाले ढेरों मिल जायेंगे लेकिन जिस राज्य में वे जन्मे, वहाँ उनकी पहचान आर्यसमाज के सदस्यों और कुछ बुद्धिजीवियों तक ही सीमित रह गई। समाज-सुधारक, स्वतंत्रता सेनानी और गांधी को महात्मा की उपाधि देने वाले स्वामी श्रद्धानन्द जालन्धर के गाँव तलवन में 2 फरवरी, 1856 को जन्मे थे। 23 दिसम्बर 1926 को दिल्ली में इस्लामिक कट्टरपंथियों ने उनकी हत्या कर दी। आर्यसमाज हर साल उस दिन को बलिदान दिवस के तौर पर मनाता है।



रविवार को गुरुकुल करतारपुर के प्रिंसिपल डॉ. उदयन आर्य के नेतृत्व में गुरुकुल के छात्रों ने नूरमहल के पास पड़ते तलवन गाँव में एक रैली निकाली और उनकी याद में हवन किया। 42 साल बाद उनके जन्मस्थान पर बलिदान दिवस मनाया गया। तलवन के लोगों ने बताया कि 1976 में तत्कालीन मुख्यमंत्री ज्ञानी जैलसिंह ने गाँव आकर ऐलान किया था कि स्वामी जी के घर को संजोया जाएगा और यहाँ एक स्मारक बनेगा। गाँव के ही 62 साल के रजिन्दर सिंह बताते हैं कि एक वो दिन था एक आज। कोई कभी नहीं आया। वे जवान से बूढ़े हो गए। इक्का-दुक्का विदेशी पर्यटक और कुछ रिसर्च स्कॉलर जरूर उन्हें ढूँढ़ते गाँव आए, मगर धीरे-धीरे घर खण्डहर बना और खण्डहर की ईंटें कब गायब हो गईं, किसी को नहीं पता।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के परम शिष्य थे स्वामी श्रद्धानन्द-डॉ. उदयन आर्य ने बताया कि स्वामी श्रद्धानन्द आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती के परम शिष्य थे। आधुनिक भारत में विलुप्त हो रही गुरुकुल शिक्षापद्धति को उन्होंने तब जिन्दा कर दिया, जब उन्होंने 1902 में हरिद्वार में गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की। गुरुकुल निर्माण के लिए अंग्रेज वायस रॉय उन्हें एक लाख रुपये की ग्रांट देते रहे लेकिन उन्होंने यह कहकर ग्रांट ठुकरा दी कि अगर उनका पैसा लूंगा तो उनके तरीके से भी पढ़ाना पड़ेगा। अपनी सारी सम्पत्ति और जमापूँजी गुरुकुल के निर्माण में लंगा दी। मौके पर नकोदर से ऊषारानी और निधि मेहता व अन्य मौजूद रहे।



मलबे से भरे प्लॉट में तब्दील हो गया है स्वतंत्रता सेनानी का जन्म स्थान-स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती की जन्मस्थली तलवन गाँव के अन्तिम छोर पर है। लगभग 5 मरले का प्लॉट चारदीवारी से घिरा है और जंग लगे गेट पर ताला लगा है। अन्दर झाड़ियाँ और रोड़ा बजरी का मलबा है। गुरुकुल के शिष्य जब जन्मस्थली के बाहर जमा होने लगे तो एक युवक जिज्ञासावश उनके पास आकर बोला कि इस प्लॉट को साफ क्यों नहीं करा देते। ऐसे हालात आर्यसमाज के कामकाज पर भी सवाल उठाते हैं कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के बाद आर्यसमाज की सम्भवतः दूसरी सबसे बड़ी शख्सियत के जन्मस्थान की दुर्दशा क्यों हो रही है?

हुंकार भरी तो अंग्रेजों ने जेल भेज दिया : अभय आर्य-पानीपत से आए आचार्य अभय आर्य ने बताया कि गुरु का बाग मोर्चा में से सिख भाईचारे के साथ खड़े थे। दरबार साहिब से जब उन्होंने सिखों के हितों के लिए हुंकार भरी तो अंग्रेजों ने उन्हें मियांवाली जेल में डाल दिया। उन्हें जेल में रखने के लिए अलग से कोठरी का निर्माण किया गया ताकि वे दूसरे कैदियों से मिल न पाएं।

कर्मचन्द गांधी को महात्मा बनाने वाले : डॉ. उदयन-डॉ. उदयन ने बताया कि स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती ही वे व्यक्ति थे, जिन्होंने मोहनदास कर्मचन्द गान्धी को महात्मा की उपाधि दी थी। स्वामी श्रद्धानन्द का नाम महात्मा मुंशीराम विज था। गुरुकुल में जब गांधी आए तो उन्होंने स्वामी

क्रमशः पृष्ठ 15 पर.....

30 दिसम्बर जयन्ती पर विशेष—

श्री प्रकाशवीर शास्त्री

वह प्रकाश, वह आर्यजगत् का वक्ता महान्

□ प्रियवीर हेमाङ्गना मो० 07065470924

अस्त हो गया वह प्रकाश जो वीर राष्ट्र का स्वाभिमान था, आर्यजगत् का सर्वश्रेष्ठ जो एकमात्र वक्ता महान् था। बचपन की प्रारम्भिक शिक्षा गुरुकुल ज्वालापुर से पाकर, स्नातक बना, मेधावी बना, 'शास्त्री' की पदवी पाकर। प्रौढ़ अवस्था के आते ही, आर्यसमाज क्षेत्र में आया, बन प्रधान उत्तर प्रदेश का, कार्यभार हाथों में लाया। बड़े-बड़े आर्य सम्मेलनों की, करता था वह अगवानी, मंच चमक जाता था उस दम, जब भाषण देता विज्ञानी। वानप्रस्थ, साधु, संन्यासी को, देता सम्मान सुज्ञानी, अभिनन्दित होते जिनसे थे उपदेशक, पण्डित, विज्ञानी। विद्वानों की भरी सभा में, जब देता वक्तृता सुहानी, जनता मन्त्रमुग्ध हो जाती सुनकर उसकी अमृतवाणी। संसद-सदस्य रहकर, दिल्ली का, देश-धर्म का मान बढ़ाया, वहाँ सभी नेताओं में भी, ख्यातिलब्ध नेता कहलाया। अशोक होटल में दिल्ली के गौ-मांस-विक्रयण सुनते ही, प्रबल विरोधी बनकर उसने शीघ्र उसे था बंद कराया। भारतीय संस्कृति में गोपालन का, पूर्ण महत्त्व बताकर, 'गोहत्या हो बन्द' देश में आजीवन यह घोष गुंजाया। ईसाई मत वृद्धि के हित जो, विदेश से धन था आता, इस कुनीति पर लोकसभा में, सर्वप्रथम प्रतिबन्ध लगाया। राष्ट्र सुरक्षा का रखता था सदा ध्यान अपने जीवन में, 'हिन्दी में हो सभी कार्य' थी अमर भावना उसके मन में। थी वक्तृत्व कला जिसमें सर्वस्वपूर्ण मानव विचित्र था, सहनशील, गंभीर विचारक-वर वह सबका परममित्र था। दयानन्द स्वामी का था वह परम भक्त कर्मठ सेनानी, धीर, वीर, निर्भीक, सुहासी थी उसकी व्यक्तित्व निशानी। ऐसे दिव्य 'प्रकाश' को मेरा, शत-शत बार नमन है, किया रेल-दुर्घटना में असामयिक परलोक गमन है। प्रकाशवीर शास्त्री ही थे 'आर्यों का वह शुभ प्रकाश', जिससे थी बड़ी आशाएँ, भाग्योदय का अटल विकास। लाला चतुरसेन गुप्त जी से, लेते थे परामर्श सुहाना, कैसे पाये आर्यावर्त यह, वही अपना उत्कर्ष पुराना। लालाजी को लेकर साथ 'आर्यसमाज' पत्र निकाला, आर्यभाषा-आर्यधर्म का, जिसने किया सर्वत्र उजाला।

आन्दोलन, हिन्दी रक्षा का, छपा पत्र में प्रमुखता से, सफल हुआ आन्दोलन जिससे, मिला मान हिंदी को इससे। आर्य-प्रवर की गौरव गाथा, अहो! कहाँ तक आज सुनाऊँ, उस प्रकाशमय प्रकाशवीर को, पुनः-पुनः कैसे अब पाऊँ? स्वर्णिम पृष्ठों से शोभित होगा, उसका इतिहास सुहाना, सदा प्रेरणादायक होगा, युग-युग में यहाँ उसका आना। प्रभु परमेश! आर्यों की अब यही याचना पूरी कर दो, वसुधा पर ऐसे प्रकाश के, पुनः आगमन का अवसर दो। -318, विपिन गार्डन, उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059

गहरे पैठ, मोती मिलेंगे...पृष्ठ 9 का शेष...

कामना करने वाले और सरकार के भरोसे ही कामना करने वाले, ये दोनों ही सुधारवादी पथ से भटक जाते हैं। स्वाध्याय करके स्वयं व अन्य के विचार परिवर्तन करते हुए आगे बढ़ना ही क्रान्ति है। ऐसे ही विचार पंडित गंगाप्रसाद उपाध्याय के थे। साथ ही स्वामी श्रद्धानन्द का व्यक्तित्व हमें सिखाता है कि आर्यसमाज को सदा साध्य बनाकर कार्य करें। आर्यसमाज को साधन बनाकर अन्य दिशा में कार्य करने वालों से सावधान रहें। इस अवसर पर भावनात्मक रूप से ये पंक्तियाँ बन रही हैं—

वे विरोध के अवरोध लगायेंगे,

हम श्रद्धा से आगे बढ़ते जायेंगे।

वे दुःखों की आग जलायेंगे,

हम उसमें सत्य के दीप जलायेंगे।

यहाँ रहें या जहाँ भी रहें,

आर्यसमाज की जय-जय गायेंगे ॥

स्वामी श्रद्धानन्द का गाँव..पृष्ठ 14 का शेष...

श्रद्धानन्द को महात्मा कहा तो स्वामी जी बोले-महात्मा तो आप हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा शुरू हुआ था 'वेदों की ओर लौटो' प्रचार कार्यक्रम-आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा 'वेदों की ओर लौटो' कार्यक्रम का शुभारम्भ खरखौदा जिला सोनीपत से किया गया था जिसका परिणाम काफी सराहनीय रहा। गत दिवस आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान मास्टर रामपाल आर्य जी द्वारा दिनांक 22.12.2018 को आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल पानीपत से 'ओ३म्' ध्वज दिखाकर तलवन, जालन्धर (पंजाब) के लिए इस वेदप्रचार यात्रा को रवाना किया गया था।

वैदिक यज्ञ एवं अभिनन्द समारोह



झज्जर 19.12.2018 स्वामी शक्तिवेश जी के अनुज पं० जयभगवान आर्य के संयोजनत्व में टीला सिलानी गेट मौहल्ला झज्जर में वैदिक यज्ञ, भजन, प्रवचन, अभिनन्दन समारोह का आयोजन किया गया। ब्र० सुभाष आर्य यज्ञ के ब्रह्मा रहे। कु० नम्रता आर्य, देवेन्द्र, विवेक, कुनाल आर्य होनहार बच्चों को वैदिक संस्कार से ओतप्रोत करने के लिये मुख्य यजमान बनाया। 90 वर्षीय मा० पनसिंह जी आर्य कार्यक्रम के अध्यक्ष रहे। मुख्य वक्ता पं० जयभगवान आर्य, संजय यादव खेड़ी खुम्मार, श्री



चन्द्रपाल जी जहाजगढ माजरा, प्रा० द्वारका प्रसाद आर्यसमाज झज्जर प्रधान, श्री भगवान सिंह आर्य, श्री ओमप्रकाश शर्मा सुहरा, श्री रामकरण कलोई, ओमप्रकाश यादव, चमनलाल यादव, श्रीमति रोशनी देवी आदि रहे। पं० जयभगवान आर्य ने कहा वैदिक ज्ञान सत्य पर आधारित विज्ञान की कसौटी पर खरा उतरता है। जो व्यक्ति वैदिक सिद्धान्तों का मन, वचन, शरीर से आवरण में लाता है। उसका सर्वांगीण विकास होता है। श्री संजय यादव ने बताया कि निष्काम भाव से परोपकार करने से जीवन सफल होता है। जिसकी कथनी में कोयलसी चहक, करणी में फुलों-सी महक और प्रेम नरमी ही जिसकी सुगन्ध होती है उसे ईश्वर का आनन्द मिलता है। श्री लाला रामअवतार, श्री मामन-सैनी, रतीराम आर्य, पं० रामकिशन दीक्षित, रामोतार दीक्षित, आत्माराम, शिवचरण आदि उपस्थित रहे। सक्रिय कार्यकर्ताओं को वैदिक साहित्य से सम्मानित किया गया। ऋषिलंगर की उत्तम व्यवस्था रही। पं० वेदप्रिय आर्य और भूराज प्रिय आर्य ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

—पं० जयभगवान आर्य, 9991456619

श्री मनोहरलाल राजपाल नहीं रहे

आर्यसमाज नई सब्जीमण्डी रेवाड़ी के वयोवृद्ध सदस्य श्री मनोहरलाल जी 87 वर्ष की आयु में 4 दिसम्बर 2018 को अकस्मात् इस संसार से विदा हो गए। वे अच्छे भले बैंक में अपने कार्य से गये थे तथा वहीं पर हस्ताक्षर करने के बाद बेसुध होकर गिर गये और फिर उठ नहीं सके। वे अपने पीछे तीन पुत्र एवं तीन पुत्रियों का भरा पूरा सम्पन्न परिवार छोड़कर गये हैं। रेलवे रोड रेवाड़ी पर आपका प्लाईवुड का प्रसिद्ध प्रतिष्ठान है। आप हिन्दी, अंग्रेजी एवं उर्दू के अच्छे जानकार थे। आप सदैव हंसते रहते थे तथा ऐसे प्रश्न पूछते थे जिनमें सामान्य बुद्धि की आवश्यकता होती थी। जैसे कप की डंडी किस तरफ होती है? उत्तर-बाहर की तरफ। आप और आपके छोटे भाई श्री ओमप्रकाश जी 1976 में इमरजेंसी में 6-7 माह जेल में भी रहे। आपका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से स्वामी जीवानन्द जी एवं श्री सुखदेव जी द्वारा किया गया। दिनांक 7.12.18 को आपकी शोकसभा में भारी संख्या में दूर-दूर से गणमान्य सदस्यों ने आपको श्रद्धांजलि दी। आप आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में सदैव सहयोग दिया करते थे। आपके पुत्रों ने रस्मपगड़ी पर अनेक संस्थाओं को आर्थिक सहयोग करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा रोहतक को भी पांच सौ रुपये का सहयोग दिया है। आर्यसमाज के सभी सदस्य उनकी आत्मिक शान्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।



—देशराज आर्य, प्रधान, आर्यसमाज नई सब्जीमण्डी, रेवाड़ी

शोक-समाचार

सभा के भजनोपदेशक श्री सत्यपाल आर्य की माता स्वर्गीय श्रीमती अत्तरी देवी का आकस्मिक देहान्त दिनांक 2.12.2018 को 78 वर्ष की आयु में गांव नंगला दुहेली जिला मुजफ्फरनगर (उ०प्र०) में हो गया। वे धार्मिक विचारों की महिला थीं।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा उनके आकस्मिक निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करती है तथा परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा की सद्गति एवं उनके परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। —सभामंत्री

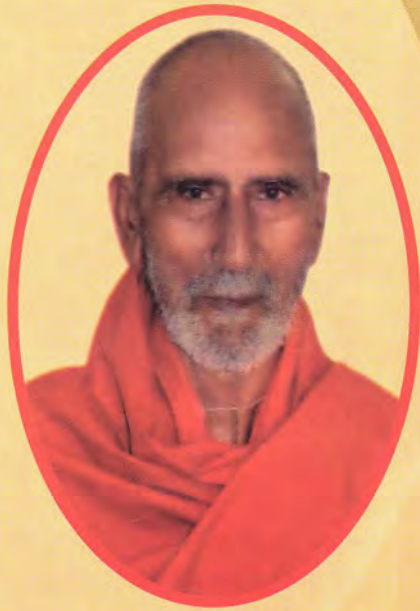


स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस
के अवसर पर माता चन्नन देवी आर्य
कन्या गुरुकुल पिल्लूखेड़ा जीन्द द्वारा
आयोजित कार्यक्रम में
उपस्थित सभा प्रधान मा० रामपाल आर्य,
स्वामी धर्मदेव जी,
सभा प्रस्तोता आचार्य सर्वभित्र आर्य,
दिल्ली सभा मंत्री श्री विनय आर्य,
महाशय धर्मपाल आर्य आदि।

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस
के अवसर पर आर्य समाज बहेड़ी-नागल
साहानपुर उ.प्र. द्वारा आयोजित कार्यक्रम में
उपस्थित सभा प्रस्तोता आचार्य सर्वभित्र आर्य
साथ में हैं ठाकुर विक्रम सिंह, वैद्य रामेश आर्य,
आचार्य धनञ्जय आदि।



ओ३म्



स्मृति शेष

आचार्य बलदेव जी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

के तत्त्वावधान में

पूज्य आचार्य बलदेव जी की स्मृति पर आयोजित

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन

दिनांक 27 जनवरी 2019

समय प्रातः 9 बजे से

स्थान - दयानन्द मठ, रोहतक

आप सभी सपरिवार सादर आमंत्रित हैं।

सम्पर्क सूत्र- 8901387993, 9416874035, 9416503513, 9991996339

Postal Regn. - RTK/010/2017-19
RNI - HRHIN/2003/10425

प्रेषक :

मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्द मठ, रोहतक
हरियाणा, 124001

श्री

पता

.....

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि.) के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक उमेद शर्मा ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स के लिए
आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक-124001 से प्रकाशित।

- सम्पादक उमेद शर्मा